Pratidhwani the Echo
A Peer-Reviewed International Journal of Humanities & Social Science
ISSN: 2278-5264 (Online) 2321-9319 (Print)
Impact Factor: 6.28 (Index Copernicus International)
Volume-XII, Issue-III, April 2024, Page No.149-159
Published by Dept. of Bengali, Karimganj College, Karimganj, Assam, India
Website: http://www.thecho.in

समकालीन कहानीः बदलते सामाजिक संबंध

डा0 आरती कौशल

सहायक आचार्या हिंदी, राजकीय महाविद्यालय ढलियारा, कांगड़ा, भारत

Abstract:

There is a deep relation between literature and society. The status of literature does not change from the society because the literary writer who lives in the society's literature, his influence always remain intact. The story has evolved with the development of human civilization. Man has a social life, on proof of which is the human instinct to tell the story. The story actually began because man felt that he had to fight for his life. well, he wants to talk and listen to others. He wants to make others a partner in his experience. The story does not just serve as the centre of self expression ,but it also gives us a sense of belonging. There is an much parallelism of public welfare or public entertainment .when we talk about contemporary stories ,it is important to know the meaning of contemporary, contemporary thoughts is the creator of our times .Globalization and the distance of liberalization has deeply affected the socio-political, economic and cultural, scenario of the latter half of 20th century and first half of 21st century .The fabric of family relation has started disintegrating .The axis of relation is now limited only to the economy. Now temple and mosques are begger than the basic questions of poverty, epidemic, malnutrition, unemployment, social injustice etc. The human understanding of these stories can be come the background of hybrid thinking.

Infact, while the contemporary story has freed itself from the one-side and mechanical thinking of politics, it also presents new ideas to the society. The basic concerned of today's story is in some way or the other related to is in some way or the other related to human civilization and human values. The ideological, emotional and relational difference between two generation of the tightening Indian culture is visible in the contemporary story.

Keywords: Contemporary, clash, Globalization, Liberalization, Family Disintegration, moral value.

साहित्य के साथ समाज का घनिष्ट संबंध होता है। साहित्य की स्थिति समाज से भिन्न नहीं क्योंकि साहित्यकार जिन सामाजिक परिस्थितियों में जीता है, उसका प्रभाव हमेशा उस पर रहता है। कहानी हिंदी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। कहानी का इतिहास नवीन न होकर बड़ा प्राचीन है। मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ ही कहानी भी विकसित हुई है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इसका एक प्रमाण कहानी कहने और सुनने की उसकी आदिम वृति है। यह उसकी सामाजिकता की ही रचनात्मक व्यक्ति की वृत्ति अभिव्यक्ति है। कहानी की शुरूआत ही वास्तव में

इसलिए हुई, कि अपने जीवन संघर्ष के दौरान मनुष्य को जो अनुभूति हूइ, उसे वह दूसरों से कहना–सुनना चाहता रहा है। अपने अनुभव में वह दूसरो को भागीदार बनाना चाहता है। कहानी केवल आत्माभिव्यक्ति का माध्यम न होकर, उससे भी आगे बढ़कर मानवीय संबोधन और संवाद है।

कहानी मानव की अभिव्यक्ति का आदिम रूप है। अपनी अनुभूति को दूसरों तक सम्प्रेषित करना मनुष्य की आदिम सभ्यता से ही शुरू हो गया होगा। मानव सम्यता की विकास यात्रा से आदिम युग से लेकर आधुनिक युग तक जिन भी कलाओं का रूप मिलता है, कहानी उनमें से एक प्रधान कला रूप है। यदि मानव सभ्यता की विकास यात्रा के समानान्तर कहानी यात्रा को देखें तो भारतीय कथासाहित्य के युग संचरण को समझना और भी सहज हो जाएगा। दुनिया का प्रथम कथा केन्द्र भारत ही माना जाता है। आदिम सभ्यता से लेकर विश्व की लगभग सभी संस्कृतियों को अपने कथा बीज यहीं से मिलते रहे हैं।

वेदों के संवादों और सूक्तों में, उपनिषदों के उपाकथाओं में, रामायण और महाभारत में ,बोध और ज्ञान, नीति धर्म आदि से संबंधित जितनी भी कहानियां मिलती है, वे मनुष्य सम्यता के आदिम युग से होकर संस्कृति और समृद्धि तक की यात्रा के वृतान्त है। बौध जातक और जैन कथाएं, पंचतंत्र और हितोपदेश, इस कथायात्रा के उल्लेखनीय पड़ाव है। इन कहानियों का प्रयोजन मनोरंजन से भी वढ़कर ज्ञान, आनंद एवं शिक्षा रहा है। परन्तु कहानी का आधुनिक रूप इससे भिन्न और विकसित परम्परा की देन है। इतनी समृद्ध और विविधता भरी कथा परम्परा हमारे यहॉ होने के वावजूद आधुनिक हिन्दी कहानी थोड़ा–बहुत पाश्चात्य प्रभाव से प्रभावित रही है। सत्यता तो यह है कि कहानी जीवन के सामान्तर हमेशा जीवन्त और गतिशील रही है।

हिंदी साहित्य की रंजनात्मक विधाओं में कहानी का स्थान महत्त्वपूर्ण है। लोक कल्याण की भावना और लोक–मनोरंजन का जितना सुन्दर समन्वय, इन विधाओं में हुआ है, उतना साहित्य की किसी अन्य विधा में नहीं। समकालीन कहानी को समझने से पहले समकालीन शब्द का अर्थ जान लेना जरूरी है। इस संदर्भ में डा0 मधुरेश लिखते हैं कि ''समकालीन होने का अर्थ सिर्फ समय के बीच होने से नहीं है। समकालीन होने का अर्थ है समय के वैचारिक और रचनात्मक दवावों को झेलते हुए, उनसे उत्पन्न टकराहटों के बीच सर्जनशीलता द्वारा अपने होने को प्रमाणित करना है।''(1) समकालीन शब्द अंग्रेजी के ''कांटेम्परेरी'' के पर्याय के रूप में हिंदी में प्रचलित है।(2) जिसका कोशीय अर्थ एक समय का, अपने समय का ,समवयस्क होता है। डॉ0 त्रिभुवन सिंह के अनुसार ''समकालीनता पूरे युग का सामाजिक ऐतिहासिक बोध न होकर स्थिति विशेष का बोध है जिसे आधुनिकता, के संदर्भ में एक सीमित दायरे में देखा जाता है।''

समकालीन कहानीकारों ने बदलते सामाजिक परिवेश को देखा, परखा और अपनी अनुभति के यर्थाथ धरातल पर नए रूप से अभिव्यक्त भी किया। समकालीन परिवेश ने कहानी के कथ्य, भाव और शैली पक्ष को नई दृष्टि प्रदांन की। समकालीन कहानी की अवधारणा भूमण्डलीकरण, वैश्वीकरण और वैज्ञानिक विकास रही हैं जिसके सामाजिक परिवेश में आर्थिक विकासता, नई और पुरानी पीढी में मूल्य–संघर्ष, भय, निराशा, अकेलापन आदि की छटपटाहट को चित्रित किया है। ''समकालीन से अभिप्रायः समय के वैचारिक और रचनात्मक दबाबों को झेलते हुए उसमें उत्पन्न विषमता, टकराव संघर्ष के बीच अपनी सृजनाशीलता द्वारा अपने होने को प्रमाणित करना।''(3) समकालीन में जन्म लेना या रहना ही समकालीन नहीं बल्कि समकालीन परिस्थितियों के कारण सामाजिक परिवेश में आए परिवर्तनो को चित्रित करना समकालीन कहानी के दायरे में है।

समकालीन कहानी का कथ्य आम आदमी का संघर्ष, स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, अन्य समाज विमर्श, भूमंडलीकरण एवं बाजारवाद के कारण उभरता नया समाज आदि है। समकालीन कहानीकारों ने समाज में व्याप्त इन विद्रूपताओं को चित्रित करने में यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया है। कहानीकारों ने बिना किसी दबाब के समकालीन समाज यथार्थ को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त किया है। पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति की चकाचौंध में व्यक्ति दिशाहीन हो गया है और उसकी अनैतिक मूल्यों के प्रति ललक बढ़ी है। व्यक्तिवादी सोच के परिणाम स्वरूप मनुष्य के समक्ष अनेक समस्याएं सामने खड़ी हूई हैं। आज व्यक्ति अपने पूर्वजो की बात या आचरण को बहुत पीछे छोड़ आगे बढ़ने में विश्वास रखता है। पूर्वजो द्वारा सिखाया आचरण कि ''प्रातः काल उठ कर रघुनाथ मातु पितः गुरू नावहि माथा'' अर्थहीन व खोखले होते चले जा रहे हैं। समकालीन हिंदी कहानी साहित्य में विभिन्न प्रकार के बदलाव देखे जा सकते हैं। जैसे पिता–पुत्र, पति–पत्नी, भाई–बहन आदि संबंधों में बिखराव। नये जीवन और मूल्यगत संकट के परिप्रेक्ष्य में कहानीकारों ने बदलती हुई जीवन–स्थितियों और संबंधों में व्याप्त तनाव, विखटन, जटिलता को पहचान कर अभिव्यक्ति करने का सफल प्रयास किया है। भीष्म साहनी, धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा, अमरकांत मोहन, राकेश, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, ऊषा प्रियवंदा ज्ञानरंजन, ममता कालिया आदि प्रमुख समकालीन कहानीकार है। समकालीन कहानियों में जीवन–याथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है। यह कहानी जीवन के लगभग हर पहलू को वास्तविकता के साथ अभिव्यक्त करती है। देश की वदलती परिस्थितियों ने जीवन मूल्यों को भी परिवर्तित किया है। ''पहले के लेखक की एक अतिरिक्त सत्ता थी, इसीलिए वह रचना करता था। आज का लेखक रचना को झेलता है, क्योंकि हर जगत भागीदारी की हैसियत से वह विद्यमान रहता है।''

जीवन मूल्यों का प्रयोजन व्यक्ति के जीवन की सार्थकता के लिए अनिवार्य है क्योंकि जीवन मूल्यों को अपनाये बिना व्यक्ति समाज या राष्ट् प्रगति व उन्नति पथ पर आगे नहीं बढ़ सकता है। कारण, जीवन मूल्यों का प्रयोजन ही समाज में नयी व्यवस्था का संचार करता है। ये मनुष्य को व्यक्तिगतस्वार्थ से निकालकर समाज के मानवीय कल्याण के लिए तथा लोकमंगल की की भावना से प्रेरित कर उन्हे मानवतावादी भूमि पर प्रतिष्ठित करता है।

समकालीन परिवेश में जो नयी पीढ़ी नजर आ रही है वह बड़ी व्यवहारिक है। समकालीन समाज में संयुक्त परिवार के टूटते चले जाने का एक प्रमुख कारण युवाओं का शहरों की और रूख करने से वूढ़ों की अपनी समस्याएं बढ़ी है। इस असहाय स्थिति में बुर्जुर्ग व्यक्ति अकेले पड़ते जा रहे हैं। ये लोग अक्सर अपनी पुरानी सोच के कारण गॉव में ही रह जाते हैं। ज्ञानरंजन की कहानी ''पिता'' में पुरानी पीढ़ी की इसी रूदिवादिता को उदघाटित किया है। ज्ञानरंजन की कहानी ''पिता'' में दोनो पीढियों के कशमकश,जीवन मूल्य–द्वंद का चित्रण हुआ है। कहानी में पुरानी पीढ़ी का अपनी समकालीन परिवेश से कटते चले जाने का दर्द चित्रित है। पंरमरागत मूल्यों से चिपके पिता के परिवार वाले उसके दैनिक कार्यशैली, रहन–सहन, खान–पान, पूजा–पाठ, संस्कृति का पूरजोर विरोध करते हैं। नयी जीवन–पद्धति की तरह आचरण करने तथा उपलब्ध सुख–सुविधाओं को उपभोग करने के लिए मनाने पर भी जब पिता नहीं मानते तो बेटों के मन में उनके प्रति उदासीनता पैदा करती है। पुत्र पिता से कहता है–''कितनी बार कहा है मुहल्ले में हम लोगों का मान सम्मान है। चार भले लोग आया जाया करते हैं और चौकीदारों की तरह पहरा देना बहुत भद्दा लगता है।''(4) दो पीढ़ियों के बीच इन द्वंदों से परिवार में तनाव, दुःख बना रहता है जिसमें एक–दूसरे के प्रति अपनत्व आत्मीयता की नींव कमजोर होती है।

समकालीन समाज में एक व्यक्ति के लिए पारिवारिक संबंधों से अधिक धन का महत्त्व वढ़ता जा रहा है। जिस कारण ही हमारे समाज से वुजुर्गों के प्रति जो मान–सम्मान, आदर भाव रहता था, वह धीरे–धीरे कम होता जा रहा है या विलीन प्रायः हो रहा है। ''छप्पन तोले का करधन''(5) कुछ ऐसी ही कहानी है जिसमें धन की लालसा में पारिवारिक संबंध संवेदनहीन होते जा रहे हैं। इस कहानी में ऐसा निर्धन परिवार है जो अथाह गरीबी और अभाव में जीवन जीने को मजबूर है। परिवार को जब पता चलता है कि परिवार में दादी के पास ऐसा करधन है जो उनकी गरीवी दूर कर सकता है तो सबकी अपेक्षा जागृत होती है। दादी करधन के प्रश्न पर हमेशा मौन रहती है जबकि परिवार दादी से करधन चाहता है। इस कारण परिवार से दादी को द्वेष और तिरस्कार का सामना करना पड़ता है। इस कहानी में कहानीकार ने दादी के माध्यम से जहॉ यह दिखाया है कि रिश्ते बेदम हैं वही साथ–साथ पारिवारिक रिश्तों को भी तार–तार होते दिखाया गया है। निजी स्वार्थो के कारण आज पारिवारिक संबंध खोखले होते जा रहे हैं। कहानी मे जहां बदलते रिश्ते चित्रित है , वही अंधविश्वास , गरीबी , भूखमरी ,संबधों का टूटना तथा संबधों में निसारता को भी चित्रित किया है।

समकालीन समाज में धन का महत्त्व इतना बढ़ गया है कि आर्थिक स्तर पर ही मुख्य रूप से पारिवारिक संबंध बदल रहे हैं। एक व्यक्ति जो नौकरी करता है, तब परिवार उसी की सहूलियत के अनुसार क्रिया– व्यवहार करता दिखाई देता है परन्तु अचानक उसकी नौकरी छूट जाने से उन्पन्न स्थिति जिसमें बेकारी के साथ भूख की, पेट की आग शायद वह सवसे बड़ी आग है जो धीरे–धीरे सब कुछ उससे छीन लेती है। उषा प्रियंवदा की कहानी '' जिन्दगी और गुलाव के फूल'' में यही कहानी है जिसमें हम देखते हैं कि व्यक्ति की नौकरी छूट जाने से उसके जीवन में कितना बड़ा बदलाव आता है, जिसके बारे में वह कभी सोच भी नहीं पाता। कहानी में सुवोध वही पात्र है, जिसकी नौकरी क्या छूटी, सारे संबंध (मां–बहन–प्रेमिका) ये सारे संबंध सुबोध को वदले हुए रूप में दिखाई पड़ते है। कथा नायक सुबोध की नौकरी छुटती है तो घर की सत्ता छोटी बहन वृंदा के हाथ में आ जाती है और इसी के साथ घर का हर क्रिया–कलाप अब वृदां की सहूलियत के अनुसार होने लगा। चाहे सुवोध का पुरूष हृदय वृंदा की सत्ता स्वीकार न करे, परन्तु उसे वृंदा के आदेश मानने पड़ते है। सुबोध सोचता है –''वह कहॉ से कहॉ आ पहुॅचा है'' नौकरी जाते ही सुवोध का आत्मसम्मान धुल गया है। अब वह छोटी बहन पर भार बना हुआ है। मॉ–बेटी का व्यवहार भी उसके प्रति बदल गया है। सबसे ज्यदा आश्चर्य तो वृंदा पर आता है–यह वही वृंदा थी जो उसके आगे–पीछे घूमती थी– और अब? उसी के स्वर थे कि काम न धंधा तब भी दादा से यह नहीं होता कि ठीक समय पर खाना तो खा ले। इसी कारण आत्म–विध्वंसक वृति उसमें घर करती गयी। जिन्दगी ने सुबोध को ''बिटर'' बना दिया और वेकारी ने उसे ''आत्म निर्वासित'' कर दिया।

उषा प्रियंवदा की ही कहानी " वापसी '' में भी कुछ ऐसी ही पारिवारिक स्थिति देखने को मिलती है। जो गृहस्वामी पूरा जीवन परिवार से दूर, अपनी सारी आशाओं, रूचि, संवेदनाओं को मन में दवाए परिवार से दूर केवल परिवार का भरण–पोषक तथा उन्हे एक बेहतर जीवन देने के लिए परिवार से दूर एकाकी जीवन परिवार की स्मृतियों के साथ ही जी लेता है, सेवानिवृति के पश्चात प्रसन्नचित घर वापिसी करता है कि जो नौकरी करने के कारण खुशी छूटी वाह अब परिवार के साथ प्रसन्नचित रहकर वह हासिल कर लेगा। लेकिन उसकी यह आशा दुराशा में वदल जाती है जब वह सेवानिवृति पश्चात घर पहुॅचते हैं, तो वह पाते हैं कि परिवार की व्यवस्था ऐसा बन चुकी है जहॉ उनकी पत्नी, बच्चे, वहु ही परिवार है वह स्वयं को उनसे कटा अनुभव करते है। वो अपने ही परिवार के बीच अपने आप को अजनवी महसूस करते है। जिस परिवार को उन्होने बड़े उत्साह, चाह से बनाया था ,

वहीं परिवार उसका न बन सका। गजाधर बाबू वही वापिस जाने की बात करते हैं जहॉ से आए थे। पर उनके जाने से किसी पारिवारिक सदस्य को न दुख हुआ न निराशा हुई जबकि स्वयं गजाधर बाबू निराशा और बेदना के भर जाते हैं। सदस्यों को पिता जी के आने से घुटन महसूस होती है तथा उनके जाने के बाद स्वतंत्रता और खुशी अनुभव होती है। गजाधर बाबू जीवन में देखते हैं कि रिक्त स्थान की पूर्ति नहीं होती, परन्तुभरे चीज में भरना या समाना मुश्किल होता है।

समकालीन कहानियों में जीवन–याथार्थ की अभिव्यक्ति हुई है। यह कहानी जीवन के लगभग हर पहलू को वास्तविकता के साथ अभिव्यक्त करती है। देश की वदलती परिस्थितियों ने जीवन मूल्यों को भी परिवर्तित किया है। ''पहले के लेखक की एक अतिरिक्त सत्ता थी, इसीलिए वह रचना करता था। आज का लेखक रचना को झेलता है, क्योंकि हर जगत भागीदारी की हैसियत से वह विद्यमान रहता है।'' जीवन मूल्यों का प्रयोजन व्यक्ति के जीवन की सार्थकता के लिए अनिवार्य है क्योंकि जीवन मूल्यों को अपनाये बिना व्यक्ति समाज या राष्ट् प्रगति व उन्नति पथ पर आगे नहीं बढ़ सकता है। कारण, जीवन मूल्यों का प्रयोजन ही समाज में नयी व्यवस्था का संचार करता है। ये मनुष्य को व्यक्तिगतस्वार्थ से निकालकर समाज के मानवीय कल्याण के लिए तथा लोकमंगल की की भावना से प्रेरित कर उन्हे मानवतावादी भूमि पर प्रतिष्ठित करता है।

ममता कालिया की कहानी ''फर्क नहीं''(6) में विमला के पिता वर पक्ष की मांगों को पूरा नहीं कर पाने के कारण विवाह करने में असक्षम होते हैं। पहली बार उसके पिता ने कहा था वह पाँच हजार नकद दे सकेंगे। लड़के के पिता ने दस हजार की मांग रखी। सरकते–सरकते उसके पिता आठ हजार पर आ गये थे, लेकिन लड़के वाले अब सोलह हजार मांगते हैं। आठ हजार में ऊँची नौकरी वाला लड़का नहीं मिल सकता। समकालीन कहानीकारों ने स्त्री समस्या को भी ऐतिहासिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में उठाया है। चाहे चित्रा मद्गल हो, मन्नु भंडारी, अनामिका, मैत्रेयी पुष्पा, ममता कालिया आदि। समकालीन कहानीकारों ने आज के सवालों को बड़ी गंभीरता से देखा, परखा और विचार किया। जनसामान्य के सवालों नयी सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था में बदलते मध्यवर्गीय समाज की चिन्ताओं को अभिव्यक्त किया है। नौकरी–पेशा महिलाओं की हर महीने मिलने वाली आय का मोह उनके पति व परिवारजन छोड़ नहीं पाते। चित्रा मुगदल ''स्टेपनी''(7) में यही यथार्थ चित्रित है। नौकरी पेशा आभा जब गर्भासस्था के दौरान नौकरी छोड़ने की बात करती है तो उसका पति ऐसा करने से मना करता है। गर्भावस्था के अंतिम महीनों में वह नौकरी छोड़ने का निर्णय ले यह सोचती है कि बच्चा जब स्कूल जाने लगेगा तो वह नौकरी के विष्य में पुनः विचार करेगी। लेकिन निर्णय परिपक्व होने से पूर्व ही आर्थिक दबाब और आत्मनिर्भता की कचोट के चलते ही वह ऐसा करने में असहज है पति भी नहीं चाहता।

समकालीन समाज में मध्यम वर्गीय व्यक्ति की उच्चवर्ग में जाने की चाह के कारण उसकी अवंसरवादिता और महत्त्वकॉक्षा भी पारिवारिक संबंधों के विघटन का एक प्रमुख कारण है। भीष्म साहनी कृत '' चीफ की दावत '' में मध्यम वर्गीय व्यक्ति की अवसरवादिता, उसकी महत्त्वाकांक्षा में पारिवारिक रिश्ते के विघटन को उजागर किया है। मध्यम वर्ग का व्यक्ति हमेशा उच्चवर्ग में शामिल हाने के अवसरों की तलाश में रहता है, चाहे ही वह खुद निम्नवर्ग से मध्यमवर्ग को पहुॅचा हो। कहानी का नायक शामनाथ दफतर में उच्चपद पाने का महत्त्वाकांक्षी हैं। इसी उद्देश्य की पूर्ती के लिए वह दफतर के विदेशी चीफ को घर दावत पर बुलाकर उसकी खुशामद करने में लगा है और दावत के नशे में वह अपनी माँ को ही सबसे छुपा कोठडी मे बन्द कर देता है । क्योंकि आज का कोई भी रिश्ता अपनी चरम सीमा तक नहीं पहॅुच पाता। इसका कारण उसमें अपनापन की कमी है। बाहर से

रिश्ते जितने भी अपनापन दिखा दें पर अंदर से वह खोखले ही हैं। दाम्पत्य जीवन के उतार–चढाव को भी समकालीन कहानीकार ने अभिव्यक्त किया है। पति–पत्नी के होते हुए किसी दूसरी औरत पर आसक्त हो जाता है और पत्नी किसी दूसरे पर। सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में आये प्रत्येक स्तर के परिवर्तन को समकालीन कहानीकारों ने अपने वैविध्यस्वरूप में यथार्थ को अभिव्यक्त किया है। संस्कृति की जननी भारतीय नारी अब अपने परमपरागत संस्कारों, मूल्यों और आदर्शों को त्याग कर अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व की तलाश मे व्यस्त है। चाहे ज्ञानरंजन के " संबध " और "शेष रहते हुए" ''अमरूद का पेड़'' हो उषा प्रियम्वदा की ''मछलियां'' मन्नू भंडारी की ''क्षय'' आदि कहानियों में नारी स्वतंत्रता और सांस्कृतिक मूल्यों के संकट को चिंत्रित करने का सफल प्रयास किया है।

इंदिरा राय की कहानी ''पल भर में सच''(8) में दाम्पत्य संवेदना का चित्र उकेरा गया है–''संगीता को आया देख अनिल अचकचा गये'' तुम ।" कल क्यो नहीं आए थे ? मेरा मन वहां नहीं लगा।" पत्नी के प्यार भरे स्पष्ट संदेश से अनिल का रोम–रोम पुलकित हो गया– ''मैं वहॉ पहुँच जाता तो इतनी जल्दी कैसे आती।'' वस्तुतः मनुष्य के जीवन मूल्यों का प्रयोजन समाज में नयी व्यवस्था का संचार करना है। आम आदमी परम्परागत संबंधों में रहकर वह ऐसा नहीं कर सकता जिसे वह प्राप्त करना चाहता है। समाज में रहने के कारण ही मनुष्य को सामाजिक नीति नियमों का पालन करना आवश्यक हो जाता है। या हम यूं कह सकते हैं कि मनुष्य समाज के बंधनों से खुद को भिन्न नहीं रख सकता है। मनुष्य की पहचान पहले उसके समाज फिर परिवार से होती है। मनुष्य अपने परिवार का अहम हिस्सा होता है। परिवार समाज का अंग है। पारिवारिक जीवन मूल्यों के अर्न्तगत परिवार को केन्द्र में रखा जाता है। समकालीन समाज में धन ने अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना दिया है। वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति धन का लोभी बनता चला जा रहा है। कारण भी स्पष्ट है, आज का व्यक्ति किसी से भी पीछे नहीं रहना चाहता है वह समाज में दूसरे व्यक्ति से एकदम आगे ही चलना चाहता है। समकालीन कहानियों में बदलते जीवन मूल्यों से यह पता चलता है कि आज का समाज अपनी पहचान बनाने में अपने पूर्वजों का अपमान ही नहीं करता उन्हे बेसहारा भी बना देता हैं। आज की युवा पीढ़ी पुराने मूल्यों को त्याग कर नवीन मूल्यों का सर्जन कर रही है। इसका असर परिवार में दिखाई देता है जो समाज से कटता जा रहा है।

संजीव की कहानी ''लोड़ शैडिंग''(9) वर्तमान संबंधों की सच्चाई बयां करती है वास्तव में हम संबंधो को जी नहीं रहे बल्कि उनका बोझ ढो रहे है। आज का समाज वास्तव में आत्मकेन्द्रित है। पारिवारिक सदस्य साथ होने के वावजूद भी एकाकीपन में जी रहे हैं। यही सबसे वड़ी विडम्बना है। यह अकेलापन समाज में हर जगह दिखाई दे जाता है। घर के रिश्तों में दरारें उभरने लगी है पूरे विश्व को ग्राम बनाने की धारणा ने व्यक्ति को अपनी संस्कृति से दूर कर दिया है, व्यक्ति ने आज के समय में ढेर सारी चीजों को अपने से दूर कर दिया है, ताकि वह अधिक से अधिक स्वतंत्र हो सके। अपनी संस्कृति से दूर हटने के कारण वह जीवन के तमाम पक्षों से हटता गया जो मनुष्य के व्यवहार को संतुलित करती थी। जिसके कारण व्यक्ति सबसे अधिक असुरक्षित हो गया, क्योंकि उससे सबसे अधिक सुरक्षित करने वाले सुख गायव हो चुके थे।

इन गायब हुए सूत्रों में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाले चाचा–चाची, दादा–दादी, ताऊ–ताई रिश्ते भी हैं, जिन्हे ''सिंगल पैरैंट'' और "स्त्री– स्वतंत्रता" की बलि चढ़ना पड़ा। जो परिवर्तन समाज में हो रहा है वह निश्चय ही अप्रत्याशित था, जिसे उदय प्रकाश की कहानी ''पाल गोमरा का स्कूटर'' में उल्लेखित किया है– पत्नियां अपने पति को छोड़कर भाग रही थी क्योंकि वाजार में उनके पतियों की कोई खास मांग नहीं थी। औरत बिकाऊ और मर्द कमाऊ का महान

चकाचक युग आ गया था'' बेकारी, बेगानापन और फ्रस्टेशन ने व्यक्ति को चाहे वह नारी हो या कोई युवक सभी को एकाकी कर दिया है। तरह–तरह के दवाव, चाहे आंतरिक हो या बाह्य , उसे ला कर ऐसी जगह खड़ा कर दिया, जहॉ रोज की घटनाओं और संवेदनाओं से कोई सरोकार नही रह गया है। ''तिरिछ'' कहानी की शुरूआत यहीं से होती है। ''इस घटना का संबंध पिता जी से है। मेरे सपने से है और शहर से भी है।'' शहर के प्रति जो जन्मजात भय होता है, उससे भी है।''

संजीव ने अपनी कहानी ''आरोहण'' में संयुक्त परिवार के विघटन का मार्थिक चित्रण किया है। इस कथा में पहाड़ी जीवन का दुख ही कहानी का मूल है। भूपसिंह का भाई रूप सिंह घर छोड़कर चला जाता है, उसकी पत्नी भी उसका साथ छोड़ देती है पर इतनी पीड़ा और संत्रास के बाद वह पहाड़ी जिंदगी छोड़ने के लिए प्रस्तुत नहीं होता।

पारिवारिक महौल में भी कभी–कभी ऐसी घुटन बन जाती है, जो खुलकर सांस भी नहीं लेने देती। जया जादवानी ने ''साक्षी'' में लकवा ग्रस्त स्त्री का चित्रण किया है, जहाँ कथाकार ने उनके घुटन भरे मन को वाणी देने का प्रयास किया है– ''अकेली खाट पर पड़ी हूॅ। अकेली और वेवस ——— अपने अंधेरे के साथ। ये क्या लिख दिया मेरी किस्मत में ऊपर वाले ने?'' यह घुटन–जलन गुस्सा नफरत इस शरीर के अंदर सिर्फ अंधेरा है। अंदर भी —— मैने अपने जिस्म को देखा ——काला——— मोटा ———संख्त मॉस का लोथड़ा। दस साल में फैलकर तिगुणा हो गया है। इसका क्या करूॅ मैं? हे भगवान।''(10)

आज पारिवारिक जीवन में प्रतिष्ठां को बनाए रखने के लिए व्यक्ति दोहरेपन का जीवन जीता है। कहानीकार ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपनी कहानी ''भय'' में दिनेश नामक ऐसे व्यक्ति का चित्रण किया है, जो एस0 सी0 है किन्तु समाज में मान–सम्मान प्रतिष्ठा हेतू जाति छिपाता फिरता है। " इतने बर्षों में रामप्रसाद तिवारी ने गाली–गलोच की भाषा इस्तेमाल किया था। साथ ही भद्दी जुवान में बाबा सहिव और बापू के लिए अपशब्द कहे थे। दिनेश ऐसे क्षणों में चुप्पी साध लेता था।''(11)

आज के परिवेश में संयुक्त परिवार के टूटने के अनेक कारण है। नए परिवेश, परिस्थिति और मूल्यों का विघटन, नव ओपनिवेशिकरण का बढ़ता प्रभाव तथा सांस्कृतिक ह्मस इनमें से प्रमुख है। वर्तमान युग के औद्योगिक विकास विशेषकर नव–औपनिवेशवाद के बढ़ते प्रभाव के फलस्वरूप गॉवों से नगरों की ओर भागने की प्रवृति ने संयुक्त परिवार का विघटन किया है।

आज के युग में देहज एक ऐसा दानव है जो किसी भी परिवार की सुख–शान्ति को पलभर में खा जाता है। माता–पिता विवाह के समय अपनी पुत्री को यथायोग्य उपहार, धन सम्पत्ति देते हैं, पर अर्थ लोलुप ससुराल पक्ष संतुष्ट न होकर रोज नई वस्तु की मांग करते हैं, तो लड़की और उसके मायके वालों का जीवन असहाय दुःख से भर आता है। समाज में फैली कुप्रथा समाज की ओछी मानसिकता को दर्शाती है तथा साथ ही साथ न जाने कितने सपनो को इस देहज रूपी राक्षस के समक्ष कुचल दिया जाता है, और प्राणप्रिय पुत्रियां देह त्याग देती हैं। सूर्यबाला ने अपनी कहानी '' पूर्णाहुति'' में इस कुप्रथा पर विस्तार से प्रकाश डाला है। मास्टर जी अपनी बेटियों के रिश्ते के लिए जहॉ भी जाते, वही दहेज लोभी दिखलाई पडते हैं, जो उनकी आर्थिक स्थिति पर पहले चर्चा करते हैं।'' ——— मित्रों हितैषियों के बताए जिन–जिन संभ्रात, सुसंस्कृत कहे जाने वाले परिवारों में वह अपनी बेटी के विवाह का प्रस्ताव लेकर गए। वहॉ के लोग बेटी की शिक्षा दीक्षा गुण–सौन्दर्य से पहले सीधे उनकी हैसियत का व्यौरा पूछते। उनकी जमीन–जायदात और चल–अचल संपत्ति का व्यौरा चाहते।'' ।

समकालीन हिंदी कहानी पर विचार करते हुए यह बात साफ होती है कि इस दौर के कहानीकारों ने समकालीन समय, समाज–परिवर्तन एवं विकास की प्रक्रियाओं को ध्यान में रखते हुए कहानी की रचना की है। कहानीकारों की जो दुनिया है वही कहानी के रचने अथवा सर्जनात्मकता की ये प्रतिक्रियाएं इतनी जटिल और विविधापूर्ण है। मैक्सिमगोर्की सृजनात्मकता के इतिहास को मानव जाति के इतिहास से कही ज्यदा रूचिकर व महत्त्वपूर्ण मानते थे। कारण भी स्पष्ट है मानव इतिहास को समझने के लिए काफी तध्यात्मक संदर्भ होते हैं परन्तु सृजनात्मकता का जो इतिहास है वह लेखक कलाकार की जिंदगी, उसके जाने–अनजाने परिवेशों, प्रसंग अनुभवों एवं विचारों के कई ऐसे पक्षों को निर्धारित और नियंत्रित करते हैं।

स्वतंत्रतापश्चात सामजिक–आर्थिक जीवन में एक बदलाव आना शुरू हुआ और यह वदलाव समकालीन साहित्य पर स्पष्ट दिखाई देता है। इसी बदलाव की प्रक्रिया से प्रभावित होकर समकालीन कहानीकारों ने मानव जीवन के विभिन्न आयामों को झांका और उनमें आ रहे रोजमर्रा के बदवाल को अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत भी किया। इन कहानीकारों ने समाजिक बिंसगतियों, व्यवस्था के अर्न्तविरोधों तथा पूंजीवादी समाज पर भी तेज–तर्रार प्रहार किया। आज की कहानियॉ वास्तब में सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक विसंगतियों और विद्रूपताओं पर अनेकानेक सटीक टिप्पणियां नजर आती हैं। आज की बदली हुई स्थितियों का आत्मीय संबंधों एवं रिश्तों पर खास प्रभाव पड़ा है। संबंधों का अर्थाश्रित और सुविधापरक हो जाना आज के जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना है।''

अवध नारायण मुदगल की कहानी "और कुत्ता मान गया।'' में पूजीवादी व्यवस्थाओं में पुरूष और नारी दोनों धन कमाने की होड़ में कभी–कभी समाज के ऐसे दो हिस्सों में बंट जाते हैं कि उनका आपकी रिश्ता भी अमानवीकरण की प्रक्रिया से गुजरने लगता है। इस दर्द को उभारती इस कहानी में केवल ''कुत्ता'' ही मानवीय संबंधों को पहचान पाता है और कभी–कभी तो केवल वही घर में पति–पत्नी के बीच पहचान का माध्यम बनता है। ''मेरी ऑखों के सामने किसी बड़े से अपरिचित समाज का धुंधला चित्र उभरता है और धीरे–धीरे समाज दो आकृतियों में सिमट जाता है । एक कुत्ते की दूसरी साहब की।'' इस व्यवस्था में मानवीयता की पहचान का पूरा दायित्व मनुष्य का न होकर कुत्ते का दिखाकर कहानीकार व्यक्ति की मूल्य टूटने की पीड़ा को चित्रित करता है– ''उस घर का असर ही कुछ ऐसा है कि वही मेरी बीवी भी मुझे नहीं पहचान पाती। हॉ, पहचानता हे तो वही कुत्ता जिसका मैं आदर करता हूॅ, जिससे मेरी भावात्मक आत्मीयता हो गयी है।''

बदलती सामाजिक व्यवस्था का सबसे वीभत्स रूप हमें पारिवारकि संबंधों में आते विखराव के रूप में देखने को मिल रहा है। बढ़ते आर्थिक समीकरणों और भौतिकवादी प्रभावों के कारण समकालीन कहानी का रूप निर्मित हुआ है। इन आर्थिक समीकरणों और भौतिकता ने व्यक्ति को आत्मपूरक और निजी स्वार्थों से घेर दिया है। जिससे मानवीय रिश्ते टूटने लगते हैं। कारण मानवीयता और भाईचारे से संबंध क्षीण होते जाते हैं।

नित्यप्रति संबंधों में आती इन गिरावट ने मॉ–वाप जैसे पवित्र रिश्तों को भी नहीं छोड़ा, जिससे ये रिश्ते आज के दौर में निरर्थक बोझ सदृश होते जा रहे हैं। संजीव ठाकुर की लम्बी कहानी ''झौआ बैहार'' में मॉ , पोते–पोती की आया मात्र बनकर रह जाती है। ज्ञान रंजन की कहानियों में इस विखराव का दर्द अनेक रूपों और स्तरों पर दिखाई पड़ता है। ''शेष होते हुए'' में ''मझले'' को लगता है कि घर अलग–अलग हिस्सों में बंटा हुआ लगता है, उसे लगता है कि एक ही घर के अन्दर कई घर हो गए हैं। छोटे भाई हीनू का अलग कमरा है, जिसमें वह अपने दोस्तों का अपने ढंग से आदर सत्कार करता है। भाई–भाभी का घर–गृहस्थी के समान से वंटा अलग कमरा है। बहन ने बरामदे में

पार्टीषन कर अलग कमरा बना लिया है–– जब वे सबलोग किसी अवसर विशेष पर इकठ्ठे होते हैं तो ''मझले'' को बड़ा विचित्र लगता है।

वर्तमान दौर में सभी संबंध स्वार्थ साधने भर के रह गए हैं। समकालीन कहानी में संबंधो की इस निर्मम परिणति को अलग–अलग दृष्टिकोण से स्पष्ट किया गया है। बढ़ती आर्थिक और वैयक्तिक स्वार्थपरता ने इन संबंधों को और भी वीभत्स रूप प्रदानं किया है। नरेन्द्र कोहली की ''पहचान'' कहानी में उस बेटे का दर्द चित्रित किया गया है जिसमें पिता उसे पूरी जिन्दगी समझ नहीं पाते हैं। वह एक कलाकार के कोमल हृदय का चित्रकार नवयुवक है और पिता उसे जिंदगी के दूसरे रास्तों पर चलाना चाहता है। पिता के अंतिंम समय में जब पुत्र कहता है कि ''टेरिबल'' पापा मुझे पहचान ही नहीं रहे–––– तो उसका दोस्त इस स्थिति को इस तरह से व्यक्त करता है ''उसके इस वाक्य ने जैसे मेरे भीतर भी बहुत कुछ छिल दिया। मन हुआ कि कुछ रोष के साथ पूँछू–तेरे पापा ने सारा जीवन तुम्हे पहचाना भी था।''

दूघनाथ सिंह अपनी कहानियों में मध्यवर्गीय निराशा कुंठा और बेचैनी को कभी सीधे–सीधे उठाते हैं तो कभी प्रतीकों को फैन्टेसी और स्वप्न कथाओं के माध्यम से चित्रित करते हैं। वही महेन्द्र भला की कहानी ''एक पत्नी के नोटस'' में रिश्ते आधुनिकता का लिवास पहनकर अपना अलग–अलग रूप धारण करने करते हैं। नायिकाने प्रेम विवाह किया, विवाहोपरान्त निजी रिश्तों में बहुत खुश है किसी से किसी प्रकार का शिकवा नहीं परन्तु धीरे–धीरे कहानी में एक नया मोड़ आता है। पति–पत्नी के रिश्ते में खिचाव आता है। आधुनिक कहानी में पति–पत्नी के बदलते रिश्तों पर भी कहानियां मिलती हैं। मध्यवर्गीय लोगों की जिन्दगी "कोल्हू के बैल " के समान है जिस प्रकार बैल अपनी सीमा में ही घूमता है या ऐसा कहा जाए कि कोल्हू के इर्द गिर्द की रहता है, उसी प्रकार मध्यवर्गीय लोग बस्तुतः अपनी छोटी सी सीमा में बंदे रहते हैं। सीमा को तोडने का प्रयास करते हैं किन्तु उसे तोड़ पाने में असमर्थ रहते। उनका सपना पूरा नहीं हो पाता तथा मध्यवर्ग मंहगाई, वेरोजगारी बिगडती आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए संघर्षरत रहता है।

अमरकांत की प्रतिनिधि कहानियों में मध्यवर्ग, विशेषकर निम्नवर्ग की जीवानानुभवों का जीवंत मानवीय चित्रण मिलता है। ''डिप्टी कलैक्टर'' कहानी में स्वतंत्रतापश्चात मध्यवर्ग में महत्वकाक्षाओं और अर्न्ताविरोध का अर्थपूर्ण चित्रण हुआ है। उनकी कहानी ''दोपहर का भोजन'' में आर्थिक परिस्थिति से परिवार में भोजन की समस्या उत्पन्न हो जाती है। परिवार दो समय की रोटी जुटाने में अपना पूरा दिन रात लगा देता है।

धर्मवीर भारती की ''मरीज नम्बर सात'' मुर्दो का गॉव, धुआं आदि कहानियों में मध्यवर्गीय चेतना को बखूवी देखा जा सकता है मरीज न0 सात में मरीज की व्यथा स्पष्ट है। " धुंआ " कहानी वेश्याओं के धार्मिक जीवन पर आधारित हैं। लेखक स्वयं कहता है –''जनसमूह पाप करे तो वह पाप नहीं रह जाता। पाप की स्थिति व्यक्ति मात्र में है।

इस प्रकार समकालीन कहानी आज के परिवेश के इर्द–गिर्द घटित होते जीवन के स्वभाविक क्रिया कलापों को चित्रण करने का सशक्त माध्यम प्रतिबिंवित हो रही है। मध्यवर्गीय जीवन का दुःख , जीवन की स्वभाविकता, गीतशीलता उनके क्रिया कलापों संबंधी मध्यवर्गीय चेतना को वास्तविक रूप में चित्रित किया है।

भूमण्डलीकरण एवं उदारीकरण के दौर ने बीसवीं सदी के उत्तर्राद्ध एवं इक्कीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध के बर्षों के सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य को बहुत गहराई से प्रभावित किया

है। पारिवारिक संबंधों का ताना–बाना विखरने लगा है। संबंधों की धुरी केवल अर्थतंत्र में सीमित हो गई है। सारे मानवीय रिश्ते अर्थाश्रित हो गये है। आर्थिक मूल्यहीन की जड़ में राजनीतिक मूल्यहीनता निहित है। श्रृष्टाचार, भाई–भतीजावाद, जातिवाद के आधार पर राजनीतिक नेतृत्व का व्यवहार हो गया है। गरीबी, महामारी, कुपोषण, बेरोजगार सामाजिक अन्याय इत्यादि बुनियादी प्रश्नो से बड़े मंदिर–मस्जिद के मसले हो गये हैं। इन कहानियों का मानवीय बोध संकर चिंतन की पृष्ठभूमि बन सकता है।

समकालीन कहानी में नारी के प्रति बढती हिंसा, शोषण, बलात्कार, हत्या आदि का यथार्थ चित्रण अभिव्यक्त हुआ है। आधुनिक नारी ने शिक्षा प्राप्त कर अंधेरी काल कोठरी से अपने आप को मुक्त कर लिया है लेकिन वह इस स्वतंत्र समाज में सुरक्षित नहीं है। बढ़ते अपराधीकण से पता चलता है कि नारी न घर में सुरक्षित है और न ही बाहर। संस्कृति की जननी नारी अब परमपरागत संस्कारों से मुक्त मूल्यों और आदर्शों को त्यागकर अपनी अस्मिता एंव अस्तित्व की तलाश में बाहर निकली है। मन्नू भंडारी की ''क्षय'' उषा प्रियम्वदा की ''मछलियां'' ज्ञानरंजन की ''शेष होते हुए'' आदि कहानियों स्त्री स्वतंत्रता और सांस्कृतिक मूल्यों के संकट को अभिव्यक्त करती हैं। निष्कर्षतः समकालीन कहानी जहॉ राजनीति की एकांगी और यंत्रवत निष्कर्षों वाली सोच से मुक्त हुई वही वह समाज के सामने नए भाव–विचार, प्रश्न भी खड़े करती है। वास्तव में आज की कहानी की मूल चिंता किसी न किसी रूप से मानव सम्यता और मानवीय मूल्यों से जुड़ी हैं। दो पीढ़ियों के बीच का वैचारिक, भावगत एवं संवेदन स्तर का फर्क, पारिवारिक विघटन और कसकती भारतीय संस्कृति का यथार्थ चित्रण ही समकालीन कहानी में दिखता है।

समकालीन कहानी में नारी के प्रति बढती हिंसा, शोषण, बलात्कार, हत्या आदि का यथार्थ चित्रण अभिव्यक्त हुआ है। आधुनिक नारी ने शिक्षा प्राप्त कर अंधेरी काल कोठरी से अपने आप को मुक्त कर लिया है लेकिन वह इस स्वतंत्र समाज में सुरक्षित नहीं है। बढ़ते अपराधीकण से पता चलता है कि नारी न घर में सुरक्षित है और न ही बाहर। संस्कृति की जननी नारी अब परमपरागत संस्कारों से मुक्त मूल्यों और आदर्शों को त्यागकर अपनी अस्मिता एंव अस्तित्व की तलाश में बाहर निकली है। मन्नू भंडारी की ''क्षय'' उषा प्रियम्वदा की ''मछलियां'' ज्ञानरंजन की ''शेष होते हुए'' आदि कहानियों स्त्री स्वतंत्रता और सांस्कृतिक मूल्यों के संकट को अभिव्यक्त करती हैं। निष्कर्षतः समकालीन कहानी जहॉ राजनीति की एकांगी और यंत्रवत निष्कर्षों वाली सोच से मुक्त हुई वही वह समाज के सामने नए भाव–विचार, प्रश्न भी खड़े करती है। वास्तव में आज की कहानी की मूल चिंता किसी न किसी रूप से मानव सम्यता और मानवीय मूल्यों से जुड़ी हैं। दो पीढ़ियों के बीच का वैचारिक, भावगत एवं संवेदन स्तर का फर्क, पारिवारिक विघटन और कसकती भारतीय संस्कृति का यथार्थ चित्रण ही समकालीन कहानी में दिखता है। समकालीन कहानी में नारी के प्रति बढती हिंसा, शोषण, बलात्कार, हत्या आदि का यथार्थ चित्रण अभिव्यक्त हुआ है। आधुनिक नारी ने शिक्षा प्राप्त कर अंधेरी काल कोठरी से अपने आप को मुक्त कर लिया है लेकिन वह इस स्वतंत्र समाज में सुरक्षित नहीं है। बढ़ते अपराधीकण से पता चलता है कि नारी न घर में सुरक्षित है और न ही बाहर। संस्कृति की जननी नारी अब परमपरागत संस्कारों से मुक्त मूल्यों और आदर्शों को त्यागकर अपनी अस्मिता एंव अस्तित्व की तलाश में बाहर निकली है। मन्नू भंडारी की ''क्षय'' उषा प्रियम्वदा की ''मछलियां'' ज्ञानरंजन की ''शेष होते हुए'' आदि कहानियों स्त्री स्वतंत्रता और सांस्कृतिक मूल्यों के संकट को अभिव्यक्त करती हैं। निष्कर्षतः समकालीन कहानी जहॉ राजनीति की एकांगी और यंत्रवत निष्कर्षों वाली सोच से मुक्त हुई वही वह समाज के सामने नए भाव–विचार, प्रश्न भी खड़े करती है। वास्तव

में आज की कहानी की मूल चिंता किसी न किसी रूप से मानव सम्यता और मानवीय मूल्यों से जुड़ी हैं। दो पीढ़ियों के बीच का वैचारिक, भावगत एवं संवेदन स्तर का फर्क, पारिवारिक विघटन और कसकती भारतीय संस्कृति का यथार्थ चित्रण ही समकालीन कहानी में दिखता है।

संदर्भ सूची:

1. मधुरेश : नई कहानी पुर्नविचार
2. डॉ अन्जनी कुमार दुबे, पूर्वांचल प्रकाशन 1988 पृ0 11.
3. गंगा प्रसार विमल, समकालीन कहानी दशा और दृष्टि पृ0 166
4. ज्ञानरंजन – ''पिता कहानी''
5. उदय प्रकाशः छप्पन तोले का करधनः पहलपत्रिका अंक–27, पृ0–243
6. ममता कालिया, 'फर्क नहीं' पृ0 124
7. चित्रा मुद्गल, आदि अनादि–पृ 60
8. इन्दिरा राय ''आरोहण ''–''हंस'' नम्बर 93 पृ0 60–61
9. संजीवः लोड़ शैडिंगः आप यहॉ है, कहानी संग्रह पृ0 स0–44
10. साक्षी कहानी–हंस, अगस्त पृ0–41
11. ओमप्रकाश बाल्मीकि ''भय'' प्रतिनिधि कहानियॉ– पृ0 41
12. नरेन्द्र कोहली–पहचान, सारिका
13. चर्जित कहानियां–ममता कालिया।
14. रवीन्द्र कालिया–नौ साल छोटी पत्नी 2002, किताबघर प्रकाश दिल्ली, पृ0–43
15. डॉ धीरज भाई वणकार, कमलेश्वर की कहानी पृ0 178
16. पुष्पपाल सिंह : समकालीनयुग बोध का संदर्भ प्र0.स0–23